आईपीएल के बहाने

जॉन बुकैनन की यह किताब आईपीएल को आधार बनाते हुए क्रिकेट के सामने खड़े कई सवालों की पड़ताल करती है

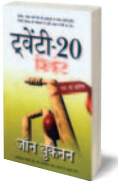

पुस्तक	:	ट्वेंटी-20 क्रिकेट, एक नई क्रांति
लेखक	:	जॉन बुकैनन
कीमत	:	165 रु
प्रकाशक	:	राजपाल प्रकाशन

देश का सबसे लोकप्रिय खेल, खेल का हिट्टमहिट्ट संस्करण और संस्करण की सबसे चर्चित टीमों में से एक के ऐसे पूर्व कोच की कलम जिसके साथ कई विवाद जुड़े हैं....अब मसाला इतना बढ़िया हो तो यह उम्मीद करना बेमानी नहीं कि खाना भी लजीज होगा. जॉन बुकैनन न सिर्फ बॉलीवुड सितारे शाहरुख खान की कोलकाता नाइट राइडर्स बल्कि क्रिकेट के इतिहास की सफलतम ऑस्ट्रेलियाई टीम के भी कोच रह चुके हैं. वे कोचिंग के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव लेकर आए. उनके साथ समय-समय पर कई विवाद भी जुड़े रहे. आईपीएल पर लिखी उनकी इस किताब ट्वेंटी-20 क्रिकेट, एक नई क्रांति के मूल यानी अंग्रेजी संस्करण ने भी आते ही बखेड़ा खड़ा कर दिया था.

लेकिन यह उसका हिंदी अनुवाद है. और यही इसका कमजोर पक्ष है जिसमें आपको 'वह लघुकाय लल्लू खेल में बहुत कम हिस्सा ले रहा था' जैसे वाक्य पढ़ने को मिलते हैं. इस वजह से ऐसा लगता है कि मानो आपको अच्छे गानों का कोई कैसेट किसी ऐसे टेपरिकॉर्डर पर सुनना पड़ रहा हो जिसका हेड खराब है. लेकिन जैसे गानों के दीवाने ऐसे भी गाने सुन लेते हैं वैसे ही क्रिकेट को जुनून की हद तक चाहने वाले भी इस किताब को किसी तरह पढ़ ही लेंगे. हां, हल्के-फुल्के शौकीनों के लिए वैधानिक चेतावनी यह है कि धीरज से काम लें वरना किताब पढ़ते हुए बीच में ही रन आउट हो जाने का खतरा है.

ट्वेंटी-20 क्रिकेट, एक नई क्रांति में कुल मिलाकर 31 लेख हैं. हर लेख में आईपीएल से जुड़े तमाम पहलुओं पर बुकैनन ने अपने विचार व्यक्त किए हैं. खेल के इस नए संस्करण के इतिहास पर भी ज्ञानवर्धक जानकारी है. इसके अलावा कई विवादों, जिनमें से कुछ उनसे भी जुड़े थे, के बारे में लिखते हुए बुकैनन ने यह भी बताया है कि असल में परदे के पीछे क्या हुआ था. इनमें शेन वार्न और गांगुली की भिड़ंत, सिक्योरिटी के बहाने शाहरुख खान को उनकी ही टीम के ड्रेसिंग रूम में जाने से रोका जाना और एक टीम के कई कप्तान वाली उनकी बात से उपजा विवाद भी शामिल है. आईपीएल के पहले संस्करण में कोलकाता नाइट राइडर्स की तरफ से खेले रावलपिंडी एक्सप्रेस शोएब अख्तर के बारे में भी कई जानकारियां हैं जो बहुत से पाठकों को दिलचस्प लग सकती हैं.

दुनिया की रफ्तार तेज है और ट्वेंटी-20 तो तेजरफ्तार खेल है ही. शायद इसीलिए 2008 के आईपीएल को आधार बनाकर लिखी गई इस किताब के बहुत-से लेख अब थोड़ा बासी-से लगते हैं. तब लिखी बुकैनन की बहुत सी बातें भी बदले संदर्भ में हास्यास्पद लगने लगी हैं. मसलन, तेंदुलकर के बारे में लिखते हुए वे कहते हैं कि उन्हें तेंदुलकर में वे गुण नहीं दिखाई देते कि वे ट्वेंटी-20 में अपना सिक्का जमा सकें मगर आज देखिए कि वही तेंदुलकर आईपीएल के इस संस्करण में अब तक पांच सौ से ज्यादा रन पीट चुके हैं और ऐसे ही चलते रहे तो शायद इस बार सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज भी वही बन जाएं.

कुल मिलाकर जॉन बुकैनन की आंखों से ट्वेंटी-20 और आईपीएल को जानने की जिज्ञासा हो तो आप यह किताब पढ़ सकते हैं.

विकास बहुगुणा

पठनपाठन

गिरिराज किराडू
कवि

आपकी मनपसंद लेखन शैली क्या है?
शैली का विचार कृत्रिम लगता है. कविता पंद्रह बरस से लिख रहा हूं. बीच बीच में ऐसे लंबे वक्फे आए हैं जब मैं कवि नहीं था. दुबारा कविता लिखना जब हुआ याद नहीं आया आखिरी बार कैसे लिखी थी. ऐसी कोई शैली नहीं थी जो पहले से होती जिसमें लिखा या लौटा जा सकता. हर बार कोई शुरुआत हो जाती. कह सकते हैं कि यह होने की शैली हुई. बार-बार कवि होना और नहीं होना. लिखना कंबख्त अपना मजाक उड़ाने का, अपने को चकमा देने का काम भी बन गया.

इन दिनों क्या लिख-पढ़ रहे हैं?
विनोद कुमार शुक्ल, भास पर लिखने के क्रम में उनको और लाकां, दिल्यूज़/ग्वाली, मार्कस, वागीश शुक्ल को व्यवस्थित पढ़ने का एक और सिलसिला शुरू हुआ है.

रचना या लेखक जो आपके बेहद करीब हों?
विनोद कुमार शुक्ल, मनोहर श्याम जोशी, रेणु, मलयज, ग़ालिब. अंग्रेजी में बहुत-कुछ पढ़ने के बावजूद सबसे करीब वही है जो हिंदी में लिखा गया है. काफ्का, बोर्हेस, कुंदेरा, दोस्तोयेवेस्की, पाज़, एको, लागरक्विस्त, अनंतमूर्ति, पोलिश कविता, संस्कृत नाटक, मारकेस, रश्दी, ओन्दात्जी, सईद, एजाज़ अहमद, जेमेसन, फूको, देरिदा, नंदी बहुत करीब हैं लेकिन वैसे नहीं जैसे हिंदी लेखन.

कोई महत्वपूर्ण रचना जो अलक्षित रह गई हो.
स्वदेश दीपकः मायापोत. मदन सोनीः उत्प्रेक्षा. मणि कौल/उदयन वाजपेयीः अभेद आकाश.

सबसे ज्यादा ओवररेटेड लेखक?
वही जिनके बारे में सबसे ज्यादा बात हुई हैः अज्ञेय, नामवर सिंह, निर्मल वर्मा, रघुवीर सहाय, ज्ञानरंजन.

क्या किया जा सकता है कि किताबें पढ़ने की परंपरा, जो धीरे-धीरे खत्म हो रही है, खत्म न हो?
किताबें, बहुत तरह की बहुत सारे तरीकों से, पढ़ी जा रही हैं. हिंदी में उतनी नहीं और कविता कहानी की उतनी नहीं पर उसके लिए हिंदी की औपनिवेशिक संस्कृति भी जिम्मेवार है जो पाठक को अपना हमराह नहीं मानती. यह संस्कृति अपने सर्वाइवल की जो सबसे मुश्किल लड़ाई लड़ रही है. उसके अंजाम पर बहुत-कुछ निर्भर करेगा.

गौरव सोलंकी